

प्लास्टिक ओवरशूट डे

प्रलिस के लयः

प्लास्टिक ओवरशूट, [एकल-उपयोग प्लास्टिक](#), [समुद्री प्रदूषण](#), [एकल उपयोग प्लास्टिक](#) और [प्लास्टिक अपशषिट प्रबंधन के उनमूलन पर राष्ट्रीय डेशबोर्ड](#), [प्लास्टिक अपशषिट प्रबंधन संशोधन नयिम, 2022](#), [प्रोजेक्ट रपिलान](#)

मेन्स के लयः

भारत में प्लास्टिक-अपशषिट से संबंधित मुद्दे

चर्चा में क्यों?

28 जुलाई, 2023 को पृथ्वी पर प्लास्टिक ओवरशूट डे (Plastic Overshoot Day) मनाया गया। यह वर्ष का वह समय होता है, जब संपूर्ण वशिव में उत्पादित प्लास्टिक अपशषिट की मात्रा अपशषिट प्रबंधन प्रणाली की क्षमता से अधिक हो जाती है।

- प्लास्टिक ओवरशूट डे पर अर्थ एक्शन (EA) (स्वसि-बेसड रसिर्च कंसल्टेंसी) द्वारा जारी की गई रपिर्त प्लास्टिक प्रदूषण के चताजनक मुद्दे और पर्यावरण पर इसके प्रभाव पर प्रकाश डालती है।

रपिर्त के प्रमुख नषिकर्षः

- परचियः**
 - प्लास्टिक ओवरशूट डे का नरिधारण देश के कुप्रबंधित अपशषिट सूचकांक (MWI) के आधार पर कया जाता है। अपशषिट प्रबंधन क्षमता और प्लास्टिक खपत के अंतर को MWI के नाम से जाना जाता है।
- प्लास्टिक प्रदूषण संकटः** रपिर्त में बताया गया है कवर्ष 2023 में 68,642,999 टन अतरिकित प्लास्टिक अपशषिट प्रकृता में प्रवेश करेगा, जो गंभीर प्लास्टिक प्रदूषण संकट का संकेत देता है।
 - रपिर्त में वशिव के 52% कुप्रबंधित प्लास्टिक अपशषिट के लयि 12 ज़मिंदार देशों की पहचान की गई है। जसिमें चीन, ब्राज़ील, इंडोनेशया, थाईलैंड, रूस, मैक्सिको, संयुक्त राज्य अमेरिका, सउदी अरब, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, ईरान, कज़ाखस्तान और भारत शामिल हैं।
 - सबसे अधिक कुप्रबंधित अपशषिट प्रतशित वाले तीन देशों में अफ्रीका केमोज़ाम्बिक (99.8%), नाइजीरया (99.44%) और केन्या (98.9%) शामिल हैं।
 - 98.55% अपशषिट के साथ भारत MWI में चौथे स्थान पर है।
- शॉर्ट-लाइफ प्लास्टिकः** प्लास्टिक पैकेजिंग और एकल-उपयोग प्लास्टिक सहति शॉर्ट-लाइफ प्लास्टिक, वार्षिक उपयोग कयि जाने वाले कुल प्लास्टिक का लगभग 37% है। ये श्रेणियाँ पर्यावरण में रसिाव का अधिक जोखमि उत्पन्न करती हैं।
- भारत के मामले में प्लास्टिक ओवरशूट डेः** देश में प्लास्टिक अपशषिट उत्पादन इसकी अपशषिट प्रबंधन क्षमता से अधिक होने के कारण भारत के लयि 6 जनवरी, 2023 को प्लास्टिक ओवरशूट डे (Plastic Overshoot Day) के रूप में मनाया गया।
 - भारत की प्रता वयकर्ता खपत 5.3 कलोग्राम है, जो वैश्विक औसत 20.9 कलोग्राम से अत्यधिक कम है।

प्लास्टिक का प्रमुख उपयोगः

- खाद्य संरक्षणः** खाद्य पैकेजिंग में प्लास्टिक का व्यापक रूप से उपयोग कया जाता है जोखराब होने वाले सामानों की शेल्फ लाइफ बढ़ाने, [खाद्य अपवयय \(Food Waste\)](#) कम करने तथा माल का कुशल परविहन सुनश्चिति करने में सहायता करता है।
- चकितिसा अनुप्रयोगः** आधुनिक चकितिसा में प्लास्टिक महत्त्वपूर्ण भूमिका नषिता है। इसका उपयोग सरिजि (Syringes), कैथेटर (Catheters) और कृत्रमि संयोजी अंगों (Artificial Joints) जैसे चकितिसा उपकरणों में कया जाता है, जो रोगी की देखभाल तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार करते हैं।
- परविहन सुरक्षाः** वाहनों के वजन को कम करने के लयि ऑटोमोटवि अनुप्रयोगों में प्लास्टिक का उपयोग कया जाता है, जसिसे ईधन दक्षता में

सुधार हो सकता है तथा उत्सर्जन में कमी आ सकती है, जिससे हरति वातावरण में योगदान दिया जा सकता है।

- **इन्सुलेशन:** प्लास्टिक सामग्री **वदियुत और तापीय प्रयोजनों के लिये उत्कृष्ट इंसुलेटर** है। ये इमारतों और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में ऊर्जा दक्षता में सुधार करने में सहायता करते हैं।
- **जल संरक्षण:** कुछ प्रकार के प्लास्टिक, जो पाइप नरिमाण और सचिआई प्रणालियों में उपयोग किये जाते हैं, **रसाव को कम करके** तथा जल वतिरण दक्षता में सुधार कर **जल संरक्षण** में सहायता करते हैं।

भारत में प्लास्टिक-अपशष्टि संबंधी मुद्दे:

- **खराब अपशष्टि प्रबंधन अवसंरचना:** भारत में अपर्याप्त अपशष्टि प्रबंधन अवसंरचना एक बड़ी समस्या है।
 - अधिकांश **नगर नगिम** अधिकारियों के पास प्लास्टिक अपशष्टि के **पृथक्करण**, संग्रह, परविहन और पुनरचकरण के लिये उचित सुविधाओं का अभाव है।
 - परणामस्वरूप प्लास्टिक अपशष्टि का एक बड़ा हसिसा **लैंडफिल (Landfills)**, खुले डंपसाइट्स (Open Dumpsites) में चला जाता है या पर्यावरण में पड़ा रहता है, जो पर्यावरण को गंभीर रूप से प्रदूषति करता है।
 - **सेंटर फॉर साइंस एंड एन्वायरनमेंट** की रिपोर्ट के अनुसार, **भारत में 12.3% प्लास्टिक अपशष्टि का पुनरचकरण कयिा जाता है और 20% को जला दयिा जाता है।**
- **एकल-उपयोग प्लास्टिक उत्पाद:** थैला, बोतलें, स्टर्स और पैकेजिंग में एकल-उपयोग प्लास्टिक उत्पादों का व्यापक उपयोग, प्लास्टिक अपशष्टि की समस्या को और बढ़ा देता है।
 - **ये वस्तुएँ सुविधाजनक तो हैं परंतु एक बार उपयोग के बाद फेंक दिये जाने के कारण** काफी प्लास्टिक अपशष्टि का संचय होता है।
- **समुद्री प्रदूषण:** भारत के तटीय क्षेत्रों पर प्लास्टिक अपशष्टि का अधिक प्रभाव पड़ता है। नदियों और अन्य जल नकियाँ के माध्यम से प्लास्टिक अपशष्टि महासागरों तक पहुँचता है, जिसके परणामस्वरूप **समुद्री प्रदूषण** की स्थिति उत्पन्न होती है।
 - यह प्रदूषण समुद्री जीवन, पारस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँचाता है और मत्स्य पालन तथा पर्यटन पर नरिभर तटीय समुदायों को आर्थिक रूप से प्रभावति कर सकता है।
- **स्वास्थ्य पर प्रभाव:** अनुचित प्लास्टिक अपशष्टि नपिटान और प्लास्टिक को जलाने से हानिकारक रसायन तथा वषिकृत पदार्थ उत्सर्जति हो सकते हैं, जिससे अपशष्टि नपिटान स्थलों के नकिट रहने वाले अथवा अनौपचारिक पुनरचकरण गतिविधियों से जुड़े समुदायों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

प्लास्टिक अपशष्टि प्रबंधन से संबंधति सरकारी पहलें:

- **एकल उपयोग प्लास्टिक के उन्मूलन और प्लास्टिक अपशष्टि प्रबंधन पर राष्ट्रीय डेशबोरड**
- **प्लास्टिक अपशष्टि प्रबंधन संशोधन नयिम, 2022**
- **REPLAN परियोजन**

आगे की राह

- **वसितारति उत्पादक उत्तरदायतिव (Extended Producer Responsibility- EPR):** भारत को EPR जैसी अपशष्टि प्रबंधन नीतियों, जो उत्पादकों को उनके प्लास्टिक उत्पादों के पूरण नपिटान के लिये ज़मिमेदार ठहराने और चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने का कार्य करती हैं, में नविश करना चाहयि।
- **अपशष्टि-से-ऊर्जा संयंत्र की स्थापना:** भारत के लिये ज़रूरी है कि वह गैर-पुनरचकरण योग्य प्लास्टिक अपशष्टि को ऊर्जा में परिवर्तति करने के लिये प्लाज़्मा गैसीकरण जैसी उन्नत तकनीकों के उपयोग वाले **अपशष्टि-से-ऊर्जा संयंत्रों** में नविश करे।
 - ये संयंत्र प्लास्टिक अपशष्टि को **प्रभावी ढंग से प्रबंधति करते हुए जीवाश्म ईंधन पर नरिभरता को कम करने और वदियुत उत्पादन में मदद कर सकते हैं।**
 - पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अनुसार, **भारत में सालाना 14.2 मिलियन टन प्लास्टिक अपशष्टि (उत्पादति सभी प्राथमिक प्लास्टिक का 71%) को संसाधति करने की क्षमता है।**
- **वकिलपों की अभकिलपना:** इस दशिा में पहला कदम प्लास्टिक की उन वस्तुओं की पहचान करना होगा जिन्हें गैर-प्लास्टिक, पुनरचकरण-योग्य या जैव-नमिनीकरणीय (बायोडिग्रेडेबल) सामग्री से बदला जा सकता है। उत्पाद डज़िाइनरों के सहयोग से एकल-उपयोग प्लास्टिक के वकिलपों और पुनः प्रयोज्य डज़िाइन की गई वस्तुओं का नरिमाण कयिा जाना चाहयि।
 - **‘ऑक्सो-बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक’ (Oxo-biodegradable Plastics)** के उपयोग को बढ़ावा देना, जो क आम प्लास्टिक की तुलना में अल्ट्रा-वायलेट वकिरिण और ऊष्मा से अधिक तीव्रता से वखिंडति हो सकता है।
- **प्लास्टिक प्रदूषण की समाप्ति हेतु संयुक्त राष्ट्र संधि का समर्थन:** प्लास्टिक प्रदूषण से नपिटने में भारत की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।
 - यह वर्ष **2019 में एकल-उपयोग प्लास्टिक पर वैश्विक प्रतबंधि का प्रस्ताव** करने वाले देशों में से एक था।
 - प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिये **संयुक्त राष्ट्र संधि प्लास्टिक प्रदूषण** के खिलाफ वैश्विक कार्रवाई का प्रतनिधित्व करती है और इसे बढ़ावा दयिा जाना चाहयि।

प्रश्न. पर्यावरण में नरिमुक्त होने वाली 'सूक्ष्म मणकिओं (माइक्रोबीड्स)' के वषिय में अत्यधिक चतिा क्यों है? (2019)

- (a) ये समुद्री पारतित्र के लयि हानकिारक मानी जाती हैं ।
- (b) ये बच्चों में त्वचा कैंसर का कारण मानी जाती हैं ।
- (c) ये इतनी छोटी होती हैं कऱ सचिति क्षेत्र में सफल पादपों दवारा अवशोषति हो जाती हैं ।
- (d) अक्सर इनका इस्तेमाल खाद्य-पदार्थों में मलिवट के लयि कयिा जाता है

उत्तर: (a)

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/plastic-overshoot-day>

